JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीलाल शुक्लजी के व्यंग्य में 'राजनीति'

डॉ.कमलेशकुमार बी.पटेल
बामना आर्ट्स कोलेज
त.भिलोड़ा जि.अरवल्ली

किसी भी साहित्य में व्यंग्य को प्रस्तुत करने के लिए राजनीति का बड़ा महत्व है | आज राजनीति सार्वभौमिक हो गई है | राजनीति का प्रभाव समाज गठन के भी पहले हुआ था | जब समाज के बिना दो चार लोग एक जगह मिलकर रहते थे तब भी उनमे जो शक्ति के बल पर शक्तिशाली होता था उसे उस झुंड का नेता बना दिया जाता था | इसी प्रकार दो-चार लोगो के समूह का काबिले में रूपांतरण हुआ और फिर धीरे-धीरे गाँव में फिर शहर में इसी तरह राष्ट्र, देश और विश्व का रूप बनाता गया | पहले अपनी सुविधा तथा सुरक्षा हेतु सरदार या मुखिया का चुनाव किया जाता था, लेकिन आज की बाँझ राजनीति सिर्फ आम जनता का खून चुसना जानता है | जनता की सुरक्षा एवं सुविधा खुद जनता को सोचने पर बाध्य करता है | समाज में फैले राजनीतिक प्रतिस्पर्धा पर समकालीन कवियों की सदा नजर रही है | लेखक तथाकथित समय के राजनैतिक परिस्थितियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए दिखे है | लेखको को पता है की समकालीन राजनीति सिर्फ वोटों और पैसों पर टिकी है आजकल नेता बनाने के लिए राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र या अर्थशास्त्र आदी विषयो की जानकारी होना जरुरी नहीं है बल्कि नेता बनाने के लिए पावर, पैसे और दादागिरी की आवश्यकता है |

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में सबसे अधिक ध्यान राजनीतिक संदर्भो पर ही दिया गया है | राजनैतिक परिस्थितियों पर किसी भी देश या राष्ट्रकी उन्नति टिकी होती है | वर्तमान समय में व्यक्ति जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला तत्व राजनीति है क्योकि राजनीति से जुड़े राजनेता ही सत्ता पर काबिज होते है और वे ही कानून व्यवस्था और नीतियों का निर्धारण तथा संचालन करते है जिसके आधार पर सामाजिक तथा व्यक्ति जीवन संचालित होता है | आज राजनीति मात्र देश सेवा के लिए नही बल्कि इसमे भी कुछ लोग व्यवसायिक अवसर तलाशते हुए मिलते है | इसे राजनीतिज्ञो का क्रिया-कलाप तमाम छल से युक्त होता है| उनकी करनी तथा

कथनी में जमीन-आसमान का अंतर होता है | विशेष रूप से चुनाव के समय किये गए वादे और सत्ता मिलाने के बाद इनका कार्य व्यवहार ज़रा भी मेल नही खाता |

राग दरबारी में भी श्रीलाल शुक्ल राजनीति पर प्रहार उपन्यास के शुरुआत से ही कर देते हैं |

'जैसे कि सत्य के होते हैं, इस ट्रक के भी कई पहलू थे |'

"हर सौ गज के बाद गियर फिसल जाता, और एक्सीलेटर दबे होने से ट्रक की घरघराहट बढ़ जाती, रफ़्तार धीमी हो जाती. रंगनाथ ने कहा 'ड्राइवर साहब, तुम्हारा गियर तो बिल्कुल अपने देश की हुकूमत जैसा है'. ड्राइवर ने मुस्कुराकर वह प्रशंसा-पत्र ग्रहण किया. रंगनाथ ने अपनी बात साफ करने की कोशिश की. कहा 'उसे चाहे जितनी बार टॉप गियर में डालो, दो गज़ चलते ही फिसल जाती है और लौटकर अपने खांचे में आ जाती है'. ड्राइवर हंसा, बोला 'ऊँची बात कह दी शिरीमानजी ने'. इस बार उसने गियर को टॉप में डाल कर अपनी एक टांग लगभग 90 अंश के कोण पर उठाई और गियर को जांघ के नीचे दबा लिया. रंगनाथ ने कहना चाहा कि हुकूमत को चलाने का भी यही नुस्खा है, पर यह सोच कर कि बात जरा और ऊंची हो जाएगी वह चुप बैठा रहा |"1

श्रीलाल का साहित्य इतना प्रखर और व्यापक है कि इनके शब्द बार -बार सम्माननीय प्रतीत होते है । इनके लेखों व व्यंग्यों में बुलंद आवाज है , जो सीधे – सीधे पाठकों को उत्तेजित कर सुरक्षा प्रदान करता है । श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्यों में मुख्य रूप से राजनीतिक विचारधाराओं , राजनीतिक गतिविधियों व सिद्धान्तों का समावेश है , जो उनकी लेखनी में दिखाई पड़ता है । परसाई की ही भाँति श्रीलाल शुक्ल भी राजनीति के पंडित है । उनके व्यंग्यों में राष्ट्रीय स्तर की राजनीति से लेकर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का चित्रण है । श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्यों की खासियत यही है कि उनके लेखनी में कोई बंधन नहीं है । उनका लेखन उन्मुक्त है , स्वतंत्र है तथा विचारों का संप्रेषण अत्यन्त तीव्र एवं स्वाभाविक है । उनमें कुशलता और कुशाग्रता का संयोजन है । उनके व्यंग्य व्यक्ति केंद्रित नहीं बल्कि उनमें पूरे देश , राष्ट्र व अंतर्राष्ट्र की परिकल्पना है । सरकारी अधिकारी होने के नाते श्रीलाल शुक्ल का राजनीति के साथ पुख्ता रिश्ता था । राजनीति के समस्त दाँव – पेंचो से श्रीलाल वाकिफ थे । परन्तु राजनीति की आँच से श्रीलाल शुक्ल हमेशा दूर रहे । उनके चरित्र के विकास में निश्छलता , ईमानदारी , सहिष्णुता , आत्मविश्वासी और स्वाभिमानता की झलक है । कालिख , बीड़ी की अहाजली कड़ियाँ , लुढका हुआ पानी और बच्चों का पेशाब - चारों ओर यही सब छितरा है , अखबारों और फैले हुए गुटबन्दों के ताबड़तोड़ बयानों की तरह । आज के संदर्भ में राजनीति दिन - प्रतिदिन अपना रूप भयंकर बनाती जा रही है । जिस प्रकार रेलगाड़ी के अन्दर

कोई भी कभी आ -जा सकता हैं , उसी प्रकार राजनीति में भी किसी विशेष पहचान की आवश्यकता ही नहीं होती । फिर क्या यह देश , राष्ट्र व समाज उनका गुलाम हो गया । उत्तर प्रदेश प्रशासन के अनेक उच्च पदों पर कार्य करने के उपरान्त भी श्रीलाल में अहम नाम की कोई चीज न थी । श्रीलाल शुक्ल ने अपनी रचनाओं में सामाजिक बंधन , कुरीतियों से लेकर भ्रष्ट नेताओं के कर्मकांडों का बखूबी चित्रण किया है । देश व राष्ट्र से जुड़े समस्त प्रकार के वातावरण में चल रहे भ्रष्ट्राचार का पर्दाफाश किया है । उनके राजनीतिक व्यंग्यों में स्वातंत्र्योत्तर भारत का पूरा परिदृश्य दिखाई पड़ता है । श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्यों में जन साधारण से लेकर बड़े – बड़े अफसर , डॉक्टर से लेकर वकील , सफेदपोश राजनीतिज्ञ से लेकर बड़े- बड़े अफसर , डॉक्टर से लेकर वकील , सफेदपोश राजनीतिज्ञ अवसरवादी ठेकेदार , पूँजीपत्ति , सामाजिक विषमताएँ , बड़े - बड़े प्रशासक , मध्यवर्गीय परिवारिक असंतोष , लाचारी , अध्यापकों की प्रतिस्पर्धा , विभिन्न प्रकार की संस्थाओं में चल रहे भ्रष्ट्राचार , सांप्रदायिक आतंक , धार्मिक व अनाचार , लेखक से लेकर कलाकारों तक के अन्दर चल रहे भ्रष्टाचार पर गहराई से विचार विमर्श है । श्रीलाल शुक्ल का रचना संसार व्यापक और विस्तृत है । कहानी हो , उपन्यास हो , निबंध हो या व्यंग्य इन सभी पर उनकी मजबूत पकड़ थी । हम जानते हैं - स्वातंत्रता के बाद जिस चीज ने समस्त भारतीयों के ऊपर अपना प्रभाव डाला वह राजनीतिक परिदृश्य है और यही कारण है कि स्वातंत्र्योत्तर राजनीति को हर एक तरफ से चित्रित करने का कार्य वर्तमान साहित्यकार व रचानकार ने किया है । वस्तुत : श्रीलाल शुक्ल जी ने भी अपनी लेखनी में वर्तमान , समसामयिक राजनीति का पर्दाफाश किया । चूँकि व्यंग्य का प्रस्फुटन ही तत्कालीन , समसामयिक व समकालीन परिवेश को भांपकर हुआ | अत : इस दृष्टि से प्रशासन व्यवस्था का ही प्रभाव सबसे अधिक व्यंग्य पर पड़ा । उनके व्यंग्यों में यथार्थ की अभिव्यंजना का समावेश है । " श्रीलाल शुक्ल अद्वितीय इन अर्थ में कि उन्होंने यथार्थ को जिस दृष्टि से देखा और अभिव्यंजना को जिन नये रूपों में प्रकट किया , वैसा उनके पहले संभव न था ।[1] घटित घटनाओं पर म सीधा वार करना किसी भी साहित्यकार की पहली पहचान होती है । निस्संदेह श्रीलाल शुक्ल में बड़े रचनाकारों की सी समस्त विशेषताओं का होना इस बात का प्रमाण है । इसी कारण उनके पाठकों की संख्या भी दिन - प्रतिदिन बढ़ती गई | श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य में राजनीतिक परिस्थितियों का खुलकर वर्णन हुआ है । देश की स्वतंत्रता के बाद लोग अपने प्रतिनिधि नेता वर्ग व राजनीतिज्ञों पर आशा लगाये बैठे थे , किन्तु राजनीतिक भ्रष्टाचार , अव्यवस्था , भ्रष्ट नौकरशाही , कुंठा , अंधविश्वास , चरित्रहीनता , अनैतिकता , स्वार्थलोलुपता , आदर्शहीनता और घुटन ने जनता को निराश किया और साथ ही साथ भारतवर्ष के मध्यमवर्ग को विशेष रूप से प्रभावित भी किया । इन्हीं परिस्थितियों के चलते साहित्य में एक विशेष लेखन को प्रोत्साहन मिला जिसका नाम

व्यंग्य है । मध्यवर्ग एक तरह से समाज का केंद्रबिन्दु होता है , इसी कारण मध्यवर्गीय समस्याएँ समाज को ज्यादा प्रभावित करती हैं । अत : स्वातंत्र्योत्तर व्यंग्यों में मध्यवर्गीय राजनीतिक परिवेश का चित्रण अधिक हुआ है । श्रीलाल शुक्ल ने अपने व्यंग्यों में देश की वर्तमान राजनीति का वर्णन किया है । इनमें पूरे देश के परिवेश में व्यापक विसंगतियों का विश्लेषण है । राजनीति में कर्त्तव्यहीनता , गैरजिम्मेदारी , सत्ता हथियाने के लिए किये गये चापलूसीपन , सभी प्रकार के पोल व कांड पर श्रीलाल ने व्यंग्यात्मक प्रहार किये हैं । उनके व्यंग्य में नेता का काम सिर्फ लेक्चर देना और चुनाव के समय वोटों के लिए भीख मांगना है । श्रीलाल शुक्ल ने दिखाया है कि राजनीति किस प्रकार , स्कूल , कॉलेज , विश्वविद्यालय से लेकर विभिन्न संस्थाओं , नगर विकास योजनाओं , पुलिस प्रशासन , भाषा लेखकों व कलाकारों तक अपना कब्जा जमा चुकी है । यहाँ शिक्षा के नाम पर धोखाधड़ी चल रही है , शिक्षक इन नेताओं के चंगुल में फँसते जा रहे हैं । श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य ' नगर विकासमंत्री से संवाद ' में सुअर के माध्यम से नगर विकास व निगम के अंदर चल रहे भ्रष्टाचार का पर्दाफाश है इसी पाठ से - " आपका विचार ठीक नहीं है । वे सड़को पर नहीं , ज्यादातर गलियों में घुमते है । वे गंदगी फैलाते नहीं , गन्दगी खाते है । नगर विकास में उसकी एक विशिष्ट भूमिका है । "[2] नगर के सड़को का विकास केवल मात्र एक सिस्टम का नाम हो चुका है , सुधारनका नहीं । यहाँ दुहाई तो अमेरिका और यूरोप के सड़कों का दिया जाता है , परन्तु काम के समय रीढ़ से हड्डी ही गायब हो जाती है । तो दूसरी तरफ दिखाते हैं कि किस तरह अपने पिता के समस्त राजनीतिक भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ दागमुक्त करने व मीडिया पर थोपता है ।□ मैं भी वही कह सकता हूँ जो ऐसे मौके पर सभी कहते हैं - कि यह सब मीडिया की शरारत है , पर मैं ऐसा नहीं कहूँगा |□[3] जैसा कि समस्त भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की विशेषता रही है कि जब वे फँसते हैं तो विपक्षों की चाल या मीडिया की शरारत कहकर अपने आप को की कोशिश करते हैं । आगे नहर - निर्माण की योजना की दुहाई देते हुए खुद को बचाते हुए यह कहना – □ हम अफ़सरों को कमीशन खिलाने के खिलाफ हैं । तभी टेंडर में हमारे रेट सबसे कम होते है |□[4] बहरलाल इन भ्रष्ट नेताओं पर चोरी और सीनाजोरी वाली कहावत पूरी तरह लागू होती हैं । भारत एक प्राचीन देश है । अपने पूरे जीवनकाल में इसने आर्थिक , राजनीतिक , धार्मिक से लेकर सांस्कृतिक विषय तक में ख्याति हासिल की है । राजनीतिक क्षेत्र भारत का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है । भारत की राजनीति में प्राचीन भारत के मनीषियों , राजनीतिज्ञों , इतिहासकारों और विशेषज्ञों का समावेश है । " प्राचीन भारतीय राज्य नागरिकों के जीवन में साधारणतया कम से कम हस्तक्षेप करता था । शासन की अपेक्षा समाज में व्यक्ति का जीवन उन रीति - रिवाजों के प्रभाव में अधिक होता था |□[5] उस समय व्यक्ति और उनसे जुड़ी समस्याओं को केन्द्र में रखकर शासन करने का

परंपरा थी |आज का शासन मानवीय मूल्यों का हनन करना मात्र रह गया है जैसा कि रधुवीर सहाय का कहना है – □ आज की बाँझ राजनीति के जमाने में , यहाँ हजारों आदमियों के मिलकर पत्थर फेंकने से या एक आदमी के अनशन कर जान , पर आज दे देने से भी सत्ता के कान पर नहीं रेंगती , वहाँ श्रीलाल शुक्ल जबर्दस्ती चिकोटी काटते चले जा रहे हैं । "[6] अत : सब जानते हुए भी कि भारतीय राजनीति गहरी नींद में सो रही है , फिर भी श्रीलाल शुक्ल उन्हें बार - बार जगाने का प्रयास करते हैं । श्रीलाल शुक्ल के राजनीतिक व्यंग्यों में समकालीन और आधुनिक संदर्भो की प्रतिस्पर्धा है । उनके व्यंग्य एक तरफ पाठकों को गुदगुदी कर उत्तेजित करते हैं परन्तु भटकाने का प्रयास कदापि नहीं है । प्रत्येक साहित्य की अपनी परम्परा होती है और प्रत्येक शिष्ट , सभ्य तथा संस्कृत जाति उस परम्परा का ध्यान रखते हुए उसमें नई कड़ी जोड़ती है । सच्चा साहित्यकार या व्यंग्यकार अपने युग के समाज को साहित्य के साथ जोड़कर जागृति पैदा करता है । वह समाज और साहित्य को एकाकार कर उस समय की घटनाओं को पाठकों के हृदय तक पहुँचाने का कार्य करता है । श्रीलाल शुक्ल राजनीति को मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते है । राजनीति के केंद्र में रहकर ही मनुष्य को वास्तविक शक्ति प्राप्त होती है । हालांकि राजनीति को लेकर कई लोगों की सोच अलग है , परन्तु वास्तविकता तो यही है कि राजनीति बिना किसी विषय का ज्ञाता होना संभव ही नहीं है । इसी कारण तो समाज के धरातल से जुड़े जितने भी रचनाकार हैं सभी की रचना में राजनीति पर हस्तक्षेप जरूर है । आज के लेखक भी मुख्यत : राजनीति पर ही अधिक लिखते हैं । श्रीलाल शुक्ल के अधिकतर व्यंग्य राजनीति से संबंधित है ,परन्तु व्यक्ति अलग है और उसके मानवीय मूल्यों की बात भी श्रीलाल अपने व्यंग्यों में उठाते हैं । उनके व्यंग्यों में स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में आई सत्ता का लोभ तथा अवसरवादी जालसाज की भरमार है । सभी नेतागण पैसा कमाना चाहते है । कुर्सी को जोंक की तरह पकड़े रखना चाहते हैं । जनता की भलाई से इन नेताओं को कुछ लेना देना नहीं था । एक जगह श्रीलाल शुक्ल लिखते है - □ आज की राजनीति में ठहराव आ गया है तो अजब नहीं कि इसका मतलब है कि वे अपने पेट्रोल के बिल का महीनों से भुगतान नहीं कर पाए हैं या यह भी मतलब हो सकता है कि दो गुटों के झगड़े में उनकी पार्टी के दफ्तर पर ताला पड़ गया है |□[7] इस वाक्य का मतलब व्यापक है । श्रीलाल शुक्ल इन पंक्तियों के माध्यम से भारतीय राजनीति की पृष्ठभूमि को सामने रखने का प्रयास करते हैं । जनता नेताओं के चापलूसीपन व धोखाधड़ी को पूरी तरह भाँप चुकी है । साधारण जन को लूटते – लूटते अब वे आपसी मतभेदों का भी लुफ्त उठा रहे हैं । अत : नेताओं के जरिए प्रगति के रास्ते पूरी तरह से बंद करवा दिये गये हैं । अगर कुछ खुला है तो वोटबैंक और राजनीति के नाम पर व्यवसाय । राजनीति और साहित्य - आज के समय में राजनीति का चश्मा समाज पर

कितना चढ़ा है इस पर विचार व्यक्त करते हुए श्रीलाल अपने व्यंग्य में मुहाविरे का उदाहरण देते हुए राजनीति पर कहते हैं – □ आज के नये मुहावरे पुराने मुहावरे से बहुत दूर है क्योंकि पुराने मुहाविरे उधोग से निकलते हैं और आज के मुहाविरे राजनीति की बहुत बड़ी फैक्ट्री है |□[8]

1. श्रीलाल शुक्ल,रागदरबारी, राजकमल प्रकाशन
2. अखिलेश,श्रीलाल शुक्ल की दुनिया,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,सम्पादकीय
3. श्रीलाल शुक्ल, खबरों की जुगाली,राजकमल प्रकाशन,नइ दिल्ली, पृ-141
4. वही पृ-140
5. वही पृ-141
6. बालराज मधोक,भारतीय राजनीति विकास तथा दिशा,भारतीय साहित्य सदन पृ-11
7. रघुवीर सहाय,यहाँ से वहाँ, श्रीलाल शुक्ल,राजकमल प्रकाशन,नइ दिल्ली,1969 पृ-परिचय से
8. श्रीलाल शुक्ल,कुछ जमीन पर कुछ हवां में,राजकमल प्रकाशन,नइ दिल्ली,पृ-171
9. वही पृ-172